IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महात्मा गांधी के विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता का आधार और भारत का बढ़ता प्रभाव के संदर्भ में,

1. परिचय

शोधार्थी – जितेन्द्र प्रसाद, Reg. No. K23574 , शोध पर्यवेक्षक – डॉ. संगीता माथुर, केरियर पॉइण्ट यूनिवर्सिटी, कोटा

2. अमूर्त

महात्मा गांधी, भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक महान व्यक्तित्व के साथ एक महान नेता व दुनिया में अहिंसा के धनी थे , वर्तमान समय में भी प्रेरणा के स्तम्भ बने हुए हैं। उनके विचार और सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं, जो उस लौकिक और भौगोलिक सीमाओं से परे हैं जो कभी उनके युग को परिभाषित करती थीं। अहिंसा, सत्य और सामाजिक न्याय आर्थिक विकास, राजनीतिक आधार ,धार्मिकता व शिक्षा के लिए गांधी की वकालत और उनके विचार आज विशेष रूप से प्रासंगिक है, क्योंकि दुनिया जटिल चुनौतियों और संघर्षों से जूझ रही है। राजनीतिक अशांति, पर्यावरणीय संकट और सामाजिक असमानताओं से चिह्नित युग में, गांधी का अहिंसक प्रतिरोध का दर्शन एक सम्मोहक विकल्प प्रदान करता है, जो शांतिपूर्ण साधनों की परिवर्तनकारी शक्ति पर जोर देता है। महात्मा गांधी देश के विकास में सबसे बड़ा हथियार आत्मनिर्भरता,अहिंसा पर जोर, सादगी और सत्य की खोज पर उनका जोर संधारणीय जीवन और नैतिक शासन पर समकालीन बहसों के साथ प्रतिध्वनित होता है। इसके अलावा, समावेशिता और सद्भाव के लिए गांधी की प्रतिबद्धता एक परस्पर जुड़ी दुनिया में वैश्विक सहयोग और समझ की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है। गांधी जी का मानना था की सम्पूर्ण दुनिया में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का प्रसार हों अर्थात इस धरती पर रहने वाले सभी एक परिवार की तरह रहे सबसे बड़ा धर्म मानवता है इससे बड़ा कुछ नहीं। आज सम्पूर्ण दुनिया युद्ध की चपेट में है जहाँ यूक्रेन और रूस के बीच युद्ध, इजराइल और हमास युद्ध ईरान व इराक युद्ध चीन और अमेरिका की बडती दुश्मनी रुस और अमेरिका के बीच लगातार खराब होते सम्बन्ध दुनिया आर्थिक कमजोरी से जुज रही हैं आर्थिक संकट उत्पन्न हों रहा हैं इस बीच भारत एक ऐसा देश है जो सम्पूर्ण दुनिया से अलग होकर महात्मा गांधी के विचारों को अपनाता हुआ आ गये बढ रहा हैं भारत दुनिया में विश्व गुरु की भूमिया निभा रहा हैं वर्तमान में भारत का नेतृत्व सही हाथों में हैं जो आज भारत दुनिया की पाँचवी सबसे बढ़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया हैं ये महात्मा गांधी के विचारों पर चलने वाला देश हैं आने वाला भारत विकसित भारत होगा महात्मा गांधी के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। संक्षेप में, गांधी के विचार एक नैतिक दिशासूचक के रूप में काम करना जारी रखते हैं, जो मानवता को अधिक दयालु, न्यायपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण भविष्य की ओर ले जाते हैं। विकसित भारत का लक्ष्य हासिल करने और अगले पांच वर्षों में दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के लिए हमें तकनीकी कौशल, नौकरियों की गुणवत्ता में सुधार करने के साथ ही बेहतर वेतन सुनिश्चित करने को प्राथमिकता देनी होगी

3. मूल शब्द –

वासुदेव कुटुम्बकम, मानवता, युद्ध, अर्थव्यवस्था, आत्मनिर्भरता,अहिंसा प्रकृति सामाजिक न्याय, आर्थिक विकास, राजनीतिक आधार , शिक्षा,सामंजस्यपूर्ण भविष्य विश्व गुरु ।

4.प्रस्तावना –

महात्मा गांधी के विचार आज सम्पूर्ण विश्व में प्रासंगिक हैं, महात्मा गांधी के विचारों से विश्व के अनेक देश प्रेरणा लेते हैं, कहा जाता हैं गांधी मर सकता हैं, लेकिन उनके विचार हमेशा जिन्दा रहेगें। गांधी के विचार से प्रेरणा लेता वर्तमान का भारत विकाशील से विकसित भारत की और चल पड़ा हैं। भारत आर्थिक और राजनीतिक आधार पर दुनिया के आगे चल पड़ा हैं। महात्मा गांधी के विचारों की जितनी प्रासंगिकता आज बनी है शायद ही कभी रही हों। गांधी एक व्यक्ति ही नहीं अपितु गांधी एक विचार है जिसके साथ जीवन को जीने का एक आधार भी हैं। जिनको जानकर हम जीवन को ही नहीं देश और विश्व को भी बदल सकते हैं, गांधी अंतरिक्ष में चमकता अदभुत सितारा हैं। गांधी का मानना था, **अहिंसा,** शक्तिहीन की शक्ति, ईश्वर की शक्ति है, सत्य और प्रेम की शक्ति है जो भौतिक दुनिया से परे आध्यात्मिक क्षेत्र में जाती है। यह शक्ति मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकती है, जैसा कि ईश्वर ने यीशु की अहिंसा, उनके सूली पर चढ़ने और उसके बाद विरोधी समुदाय में पुनरुत्थान के माध्यम से प्रकट किया गांधी सहिन्सा को एक ब्रह्मास्त्र की तरह मानते थे उनका मानना था की हिंसा को समाप्त करने का सबसे बड़ा हथियार अहिंसा ही हैं। महात्मा गांधी का जन सम्पर्क अदभुत और अप्रतिम कीर्तिमान हैं। उनके सम्पर्क और समर्थन का लोहा सम्पूर्ण विश्व में मना जाता हैं। खुद को पाने का सबसे अच्छा तरीका है, खुद को दूसरों की सेवा में खो दो। गांधी की यही बातें उन्हें औरों से अलग करती हैं। आज के इस परिदृश्य में जहां संपर्क के नए–नए तकनीक उपलब्ध हैं और मनुष्य पलक झपकते हीं करोड़ों लोगों से मीलों दूर संपर्क साध सकता है, तब हमें कोई ऐसा जनप्रिय शख्सियत दिखाई नहीं देता जो जनसंपर्क और जनसमर्थन के मामले में गांधी का मुकाबला कर सकता हो। भारतीयों की समस्याओं का निदान के लिए हमेशा सोचतेः बापू का कहना था कि एक अच्छा इंसान हर सजीव का मित्र होता है और यही बात उन्हें खास बनाती थी। सभी लोगों से वे मित्रता की भाव रखते हुए 'वसुधैव कुटुम्बकम' की धारणा रखते थे। वे समुचित मानव जाति के विकास, कल्याण और उत्थान की बातें करते थे। गांधी जी दक्षिण अफ्रीका से वापस लौटने के बाद देश के कोने–कोने में गए और लगभग चार वर्षों तक भारतवर्ष में भ्रमण कर लोगों के हाल जानने की कोशिश की। साथ ही उनकी समस्याओं का निदान करने के ठोस विकल्पों के बारे में भी चिंतन करते रहे।जाति, धर्म, क्षेत्र और भाषा की भेदभाव को खत्म करना चाहते थेः जनसंपर्क के दौरान एक बार जब उनसे पूछा गया कि क्या वह हिन्दू हैं, उनका जवाब था 'हां मैं हिन्दू हूं। मैं एक ईसाई, मुस्लिम, बौद्ध और यहूदी भी हूं। यह था उनके मानवता के प्रति लगाव। उनके यही विचार जनचेतना लाने में कारगर सिद्ध हुए थे। अछूतों को समाज में सम्मान व बराबरी दिलवाने के लिए गांधी ने देश के हर कोने में जाकर जनसंपर्क साधा और लोगों को जागरूक किया। इसके साथ ही उन्हें आपसी मतभेदों से ऊपर उठकर उपनिवेशवाद के खिलाफ संघर्ष में एकजुट होने के लिए प्रेरित किया। उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडू ने आज कहा कि श्वसुधैव कुटुम्बकमश अनादि काल से भारतीय परिवार प्रणाली का मार्गदर्शक रहा है तथा हमारे लोकाचार और सामाजिक–सांस्कृतिक ताने–बाने इसी अवधारणात्मक वाक्यांश के इर्द–गिर्द बुने हुए हैं।आज नई दिल्ली में वैश्विक माताओं के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन–2019, **वसुधैव कुटुम्बकम** – परिवार व्यवस्था और माँ की भूमिकाष का उद्घाटन करते हुए, उपराष्ट्रपति ने सम्मेलन के विषय पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह सम्मेलन मातृत्व का उत्सव है।उन्होंने कहा, ष्पूरा विश्व माताओं का ऋणी है और यही कारण है कि सभी धर्मों और दुनिया के सभी हिस्सों में माताओं को प्रासंगिकता और श्रद्धा का विशेष स्थान प्राप्त है।ष्वेदों और पुराणों जैसे विभिन्न प्राचीन ग्रंथों का हवाला देते हुए श्री नायडू ने कहा कि महिलाओं का सम्मान हमारी सभ्यता का मूल आधार रहा है। उन्होंने आगे कहा कि किसी भी परिवार में, चाहे वह एकल हो या संयुक्त, एकजुट हो या विस्तृतय माँ केंद्र में होती है। वह वह बंधन है जो परिवार को एक साथ बांधे रखती है। अपने समर्पण से वह घर की चार दीवारों को घर में बदल देती है जहाँ प्यार, स्नेह, दूसरों के प्रति सम्मान,

परिवार, समाज और देश के प्रति निस्वार्थ योगदान मौजूद होता है।इस बात पर प्रकाश डालते हुए कि सभी नदियों का नाम महिलाओं के नाम पर रखा गया है, उपराष्ट्रपति ने कहा, हमारी संस्कृति में महिलाओं को न केवल पुरुषों के बराबर माना जाता है, बल्कि कई मामलों में उनसे श्रेष्ठ भी माना जाता है। हालांकि, उन्होंने कहा कि कहीं न कहीं हमारे मजबूत मूल्य कमजोर पड़ गए हैं। उन्होंने महिलाओं के खिलाफ बढ़ती हिंसा और बुजुर्ग माताओं के साथ दुर्व्यवहार और परित्याग पर भी चिंता व्यक्त की।उन्होंने महिला सशक्तिकरण के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कई कदमों का उल्लेख किया, जैसे श्बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओं, स्थानीय स्वशासन में 50 प्रतिशत आरक्षण, तथा कहा कि महिलाओं की सुरक्षा और उन्हें समान मंच प्रदान करने के लिए अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। महिलाओं के समान अधिकारों के महत्व पर जोर देते हुए उपराष्ट्रपति ने महात्मा गांधी को उद्धृत किया, जिन्होंने एक बार लिखा था कि, "हम अपनी महिलाओं के साथ जिस तरह का व्यवहार करते हैं, वह हमारी संस्कृति की समृद्धि का सूचक है।" उन्होंने कहा कि महिलाओं के कमजोर होने से परिवार, समाज और देश कमजोर होगा। परिवार के महत्व पर बोलते हुए श्री नायडू ने कहा कि हमारे पूर्वजों ने त्याग, सम्मान और एकजुटता के मूल्यों पर आधारित सर्वश्रेष्ठ पारिवारिक मॉडल विकसित किया और सदियों तक उसी का पालन किया। उन्होंने कहा, भारत अपनी मजबूत पारिवारिक मूल्य प्रणाली के कारण पूरी दुनिया के लिए एक आदर्श बन सकता है, जिसने समय की कसौटी पर सफलतापूर्वक खरा उतरा है। किसी भी देश के विकास भाईचारा सत्य अहिंसा और शिक्षा का होना अनिवार्य हैं येसा गांधी जी के विचारों को पढ़ कर मालुम पड़ता हैं हिंसा के जिक्र के साथ अहिंसा का याद आना नितांत स्वाभाविक है और अहिंसा के साथ याद आती है महात्मा गांधी की. यह एकदम उपयुक्त है कि हम युद्ध और टकराव की राजनीति को समझने के लिए गांधी के नजरिये का इस्तेमाल करें.महात्मा गांधी कहते हैं, "अन्याय के दमन या झगड़ों के निपटारे के लिए अहिंसा का दूसरा नाम ही विवेक है. विवेक का अर्थ मध्यस्थ का किया हुआ किसी झगड़े का बाध्यकारी निर्णय अथवा युद्ध नहीं है. मैं अपने विश्वास पर जोर देकर यही कर सकता हूं कि यदि मेरे देश को हिंसा के जरिये स्वतंत्रता मिलना संभव हो, तो भी मैं उसे हिंसा से प्राप्त न करूंगा. तलवार से जो मिलता है, वह तलवार से हर भी लिया जाता है". गांधी ने 13 जुलाई 1940 को हरिजन सेवक में लिखा, "मेरी हर अंग्रेज से यह प्रार्थना है कि वह राष्ट्रों के आपसी ताल्लुकात और दूसरे मामलों के फैसलों के लिए युद्ध का मार्ग छोड़कर अहिंसा का मार्ग स्वीकार करे. आपके राजनेताओं ने कह दिया है कि यह युद्ध प्रजातंत्र की रक्षा के लिए लड़ा जा रहा है. युद्ध को न्यायोचित सिद्ध करने के लिए और भी बहुत से कारण दिए गये हैं. मेरा कहना है कि युद्ध समाप्त होने पर जीत किसी भी पक्ष की हो, प्रजातंत्र का कहीं नामोनिशान भी नहीं मिलेगा. यह युद्ध मनुष्य जाति के लिए अभिशाप और चेतावनी है. यह युद्ध शाप है, क्योंकि आज तक कभी इंसान इंसानियत को इस तरह नहीं भूला था, जितना इस युद्ध के असर में भूल रहा हैं। यह युद्ध एक चेतावनी भी है. अगर लोग कुदरत की इस चेतवानी से न जागे, तो इंसान हैवान बन जाएगा." महात्मा गांधी के देश के आर्थिक विकास में जो विचार रहे, उन्हें वर्तमान में प्रासंगिक किया हैं। मजबूत हुई है। वर्तमान में भारत दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी **अर्थव्यवस्था** बनकर उभरा है। तकनीक में चन्द्रयान–3, सूर्ययान (आदित्य , एल –1) की सफलता जी–20 सम्मेलन जैसी अनेक प्रकार के सफल कार्यक्रमों से भारत का दबदबा सम्पूर्ण विश्व में आर्थिक, राजनैतिक व्यवस्थाओं के आधार पर माना साथ ही साथ भारतीय राजनीति व उसकी कूटनीति को दुनिया ने सलाम किया। वर्तमान में भारत की विश्व में जो साक हुई है उसे देखते उसे देखते हुए लगाने लगा की महात्मा गांधी का भारत जल्दी से एक विश्व गुरु, विकशीत भारत होने वाला हैं। **ट्रस्टीशिप** ट्रस्टीशिप एक सामाजिक–आर्थिक दर्शन है जिसे गांधीजी द्वारा प्रतिपादित किया गया था। यह अमीर लोगों को एक ऐसा माध्यम प्रदान करता है जिसके द्वारा वे गरीब और असहाय लोगों की मदद कर सकें। यह सिद्धांत गांधीजी के आध्यातिमक विकास को दर्शाता है, जो कि थियोसोफिकल लिटरेचर और भगवतगीता के अध्ययन से उनमें विकसित हुआ था। वर्तमान समय में गांधीजी की यह विचारधारा काफी प्रासंगिक है जब विश्व में गरीबी और भूखमरी चारों तरफ अपना साया फैलाये खड़ी है। गांधीजी का यह विचार कि धन व उत्पादन के साधनों पर सामूहिक नियंत्रण की स्थापना हेतु न्यास जैसी व्यवस्था स्थापित की जाए, काफी मायने रखती है। **स्वदेशी** शब्द संस्कृत से लिया गया है और यह संस्कृत के दो शब्दों का एक संयोजन है। 'स्व' का अर्थ है स्वयं और देश का अर्थ देश ही है अर्थात् अपना देश। स्वदेशी का शाब्दिक अर्थ अपने देश से

लिया जाता है परंतु अधिकांश संदर्भों में इसका अर्थ आत्मनिर्भरता के रूप में लिया जा सकता है। स्वदेशी राजनीतिक और आर्थिक दोनों तरह से अपने समुदाय के भीतर ध्यान केंद्रित करता है। यह समुदाय और आत्मनिर्भरता की अन्योन्याश्रिता है। गांधीजी का मानना था कि इससे स्वतंत्रता (स्वराज) को बढ़ावा मिलेगा, क्योंकि भारत का ब्रिटिश नियंत्रण उनके स्वदेशी उद्योगों के नियंत्रण में निहित था। स्वदेशी अभियान भारत की स्वतंत्रता की कुंजी थी और महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यव्रमों में चरखे द्वारा इसका प्रतिनिधित्व किया गया था। आज जब अमेरिका एवं चीन जैसे देश व्यापार–युद्ध के माध्यम से अपने देश को सशक्त और दूसरे देशों की आर्थिक व्यवस्था को कमजोर करने पर तुले हैं। ऐसी स्थिति में स्वदेशी की यह संकल्पना देश के घरेलू उद्योगों और कारीगरों हेतु एक वरदान की भांति सिद्ध होगा। **गांधीजी शिक्षा** के संदर्भ में अध्ययन व जीविका कमाने का कार्य एक साथ करने पर बल देते थे। आज जब बेरोजगारी देश की इतनी बड़ी समस्या है तब गांधीजी के इस विचार को ध्यान में रखकर शिक्षा नीतियाँ बनाना लाभप्रद होगा। गांधीजी का राष्ट्र का विचार भी अत्यंत प्रगतिशील था। उनका राष्ट्रवाद 'वसुधैव कुटुम्बकम' के विस्तार से प्रेरित था। वे राष्ट्रवाद की अंतिम परिणति केवल एक राष्ट्र के हितों तक सीमित न मानते हुए उसे विश्व कल्याण की दिशा में विस्तृत करने पर बल देते थे। आजकल राष्ट्रवाद का अतिवादी स्वरूप होता देखकर गांधीवादी राष्ट्रवाद सटीक लगता था, हम पाते हैं कि गांधीजी के विचार शाश्वत है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि उन्होंने जमीनी तौर पर अपने विचारों का परीक्षण किया और जीवन में सफलता अर्जित की जो न सिर्फ स्वयं के लिये अपितु पूरे विश्व के लिये थी। आज दुनिया गांधी के मार्ग को सबसे स्थायी रूप में देखती थी। **मानवता और समानता** – समानता न केवल गांधीवादी विचार का एक प्रमुख सिद्धांत है, बल्कि यह सामाजिक और **राजनीतिक विचारों** पर अधिकांश अन्य लेखकों की सबसे अधिक आकांक्षी अवधारणाओं में से एक है। लेकिन अगर हम इस अवधारणा का विश्लेषण करें तो हमें इन लेखकों के दृष्टिकोण पर मतभेदों का सामना करना पड़ेगा। हम इस शब्द का उपयोग विशेषताओं की समानता और उपचार की समानता के अर्थ में करने के आदी हैं। पूर्व को छोड़कर, समानता के मानदंडों का उपयोग कई अर्थों में किया गया है जैसे (ए) निष्पक्षता (बी) सभी के लिए समान हिस्सा (सी) समान लोगों के लिए समान हिस्सा (डी) आनुपातिक समानता (ई) प्रासंगिक मतभेदों के अनुरूप असमान हिस्सा। गांधीजी ने जाति आधारित भेदभाव की सामाजिक प्रथाओं को पूरी तरह से खारिज कर दिया और अस्पृश्यता को अस्पृश्यता एक पाप है। उनके शब्दों में, अस्पृश्यता के खिलाफ मेरी लड़ाई अस्पृश्यता अशुद्ध मानवता के खिलाफ लड़ाई है (कुमार, 2007 में गांधी का हवाला दिया गया। सितम्बर 1930 में, जब वे वाई में कैद थे। एरावदा जेल में गांधी जी ने किया विरोधअछूत प्रथाएँ। इस विरोध के प्रभाव से मंदिरों को खोला गया औरहरिजनों के लिए कुएँ गांधी द्वारा निम्न जाति के लोगों के लिए प्रयुक्त शब्द अस्पृश्यता के विरुद्ध हरिजन सेवक संघ की स्थापना और हरिजन नामक पत्रिका ,गांधी जी द्वारा शुरू किए गए कुछ महत्वपूर्ण विकास कार्य थे, जिन्होंने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाईभारत में जातिगत भेदभाव के खिलाफ संघर्ष में गांधी जी ने एक व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया।भारतीय समाज में जातिगत संबंधों को बदलने में उनका हस्तक्षेप सराहनीय रहा।जैसा कि पता हैअधीनस्थ स्थिति जिसने हरिजनों को हमेशा के लिए समाज की उच्च स्थिति से बांध दियाऊंची जाति के हिंदुओं (कुमार, 2007)। गांधी की इसी अनुभूति ने उन्हें आगे बढ़ाया।उसे वी के रूप में जो कहा जाता है उसके बीच अंतर करने के लिएअर्नाश्रम धर्म (एक विहितमूल्य अनिवार्यतः पदानुक्रमिक कठोरता पर आधारित है) और जाति एक अस्तित्वगत वास्तविकता है (समाज में बिना किसी पदानुक्रम के श्रम विभाजन की व्यवस्था)। तदनुसार,उन्होंने जाति प्रथा की कुरीतियों पर प्रत्यक्ष नहीं, बल्कि अप्रत्यक्ष प्रहार किया उन्होंने अपील की। गांधीजी चाहते थे कि **भारतीय अर्थव्यवस्था** बड़े पैमाने के उद्योगों या उपभोग व्यय के बल पर चलने के बजाय स्वायत्त ग्राम गणराज्यों के इर्द–गिर्द केंद्रित हो। अपने आर्थिक विचारों को तैयार करने के लिए गांधीजी के सिद्धांत श्प्रकृति की ओर लौटने के आह्वान पर आधारित थे। वह चाहते थे कि लोग जीवन में अपनी इच्छाओं को कम करें और इसके बजाय आध्यात्मिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अपनी क्षमताओं के विकास पर ध्यान केंद्रित करें। इसके लिए गांवों में रहने वाले लोगों को काम की तलाश में पागलों की तरह शहरों की ओर भागने की जरूरत नहीं होगी। सभी लोग ज्यादा संतुष्टिदायक और सार्थक जीवन जीएँगे। वह अर्थव्यवस्था में मशीनों और औद्योगिक उत्पादन प्रणालियों के उपयोग को तभी उचित ठहराते थे जब परिणाम लोगों की मौलिक और सबसे बुनियादी जरूरतों को पूरा करते हों। यह लेख

गांधीजी के आर्थिक सिद्धांतों का वर्णन करता है ताकि यह विश्लेषण किया जा सके कि वे आज के बाजार के मुक्त संचालन के साथ कैसे भिन्न हैं जिसने समाज में कई नई असमानताएँ पैदा की हैं। भारत में उदारीकृत तेज आर्थिक विकास मॉडल ने ग्रामीण क्षेत्र के विकास को शहरी केंद्रों में उपभोक्ता वस्तुओं के व्यापार और विनिर्माण में तेज वृद्धि के लिए गौण बना दिया है। यह गांधीजी द्वारा अपने देश के लिए बताए गए रास्तों से बिल्कुल उलट है और इसने उन्हीं सामाजिक असमानताओं को और बढ़ा दिया है जिन्हें वह कम होते देखना चाहते थे। वर्तमान में गांधी के विचारों की प्रासंगिकता भारत को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व को जरुरत हैं। गांधी का मानना था की आर्थिक विकास के साथ साथ प्रकृति और जलवायु में भी जोर दिया जाये। लगातार जलवायु के परिवर्तन होने से हमारी पृथ्वी संकट में आ रही हैं हमें हमारे संसाधनों का भी ध्यान रखना होगा, सतत एवं व्यापक विकास की धारणा के साथ आगे चलना होगा, साथ ही महात्मा गांधी का मानना था की किसी भी देश के विकास के लिए आत्मनिर्भरता जरुरी होती हैं, इसलिए हमे अपना कौशल बढ़ाना होगा। गांधी स्वरोजगार की बात भी करते थे, जिसे लेकर वर्तमान भारत सरकार ने ध्यान दिया आज भारत विश्व की सबसे बड़ी पाँचवी अर्थव्यवस्था हैं और भविष्य में विकसित भारत बन जायेगा। महात्मा गांधी बुनियादी शिक्षा पर जोर देते थे इसे लेकर आज भारत सरकार के कौशल विकास कार्यक्रम नई ऊंचाई पर हैं। **सोने सी चमक रही भारतीय की अर्थव्यवस्था–** वर्तमान भारत एक विश्व गुरु की और बढ रहा हैं आज अनुमानों को ध्वस्त करते हुए भारतीय अर्थव्यवस्था वित्त वर्ष 2023–24 में रॉकेट की स्पीड से बढ़ी और 2024–25 में भी यह तेजी जारी रहने का अनुमान है। भारत की जीडीपी ग्रोथ रेट वित्त वर्ष 2023–24 में 8.2: बढ़ी, वहीं मार्च तिमाही में जीडीपी ग्रोथ रेट 7.8: बढ़ी, जबकि अर्थशास्त्री इसे 7: से भी नीचे रहने का अनुमान जता रहे थे। आरबीआइ के मुताबिक, वित्त वर्ष 2024–25 में भी देश की अर्थव्यवस्था 7: की दर से बढ़ेगी, जो दुनियाभर में सबसे तेज होगी। मार्च तिमाही, 2024 में भी भारतीय अर्थव्यवस्था दुनियाभर में सबसे अधिक तेजी से बढ़ी। मैन्युफैक्चरिंग व कंस्ट्रक्शन के साथ सर्विस सेक्टर में शानदार तेजी से जीडीपी में शानदार तेजी आई, हालांकि कृषि क्षेत्र का प्रदर्शन काफी एक साल में कमजोर रहा। अप्रेल 2024 में 8 बुनियादी उद्योगों का उत्पादन भी 6.2: बढ़ा। मार्च में कोर सेक्टर की ग्रोथ रेट 6: रही थी। साथ ही देश के राजकोषीय घाटे में भी भारी कमी आई है। 2023–24 में फिस्कल डेफिसिट जीडीपी के 5.63: के बराबर रहा, जो सरकार के संशोधित अनुमान 5.8: से भी कम है। **अर्थव्यवस्था पैदा हो रहे हैं श्रमिकों के लिए नए अवसर रोजगार बढ़ाने के साथ तकनीकी कौशल पर ध्यान देने का समय** भारत दुनिया में सबसे ज्यादा आबादी वाला देश बन चुका है। वर्ष 2018–19 के आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार वर्ष 2041 ले आसपास भारत का यह जनसांख्यिकीय लाभांश शीर्ष पर होगा। कामकाजी आयु जो 20 से 59. मानी जाती है, उसके आबादी के 59 फीसदी तक पहुंचने का अनुमान जताया गया है। ठीक इसी वक्त द लेंसेट में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार वर्ष 2021 में भारत की प्रजनन दर (टीएफआर) घटकर 1.9 हो गई और जो 2050 बक और घटकर 1.29 तक हो सकती है। यह प्रतिस्थापन दर 2.1 से काफी कम है। बताते चलें कि प्रजनन दर से आशय किसी देश में रहने वाली महिलाओं (15 से 49 वर्ष) के जीवनकाल में पैदा होने वाले जीवित बच्चों की औसत संख्या से है तो प्रतिस्थापन दर एक महत्त्वपूर्ण जनसाख्यिकीय संकेतक है जिसका इस्तेमाल जनसंख्या रुझान और भविष्य की सामाजिक. और आर्थिक जरूरतों के मद्देनजर योजना बनाने के लिए किया जा सकता है। इसका सीधा मतलब यह है कि 2021 के बाद से भारत नए जन्मों और मौतों के आंकड़ों के साथ संतुलन नहीं बैठा पा रहा है और भारत की आबादी में वृद्ध व्यक्तियों का अनुपात धीरे–धीरे बढ़ रहा है। श्रमबल में ज्यादा लोगों की मौजूदगी और कम बच्चों का होना, भारत के उच्च आर्थिक विकास के लिए अवसरों की खिड़की है। इस लाभांश का भरपूर लाभ मिले, इसके लिए जरूरी है कि युवा वर्ग को आर्थिक गतिविधियों में शामिल करने के लिए ज्यादा अवसरों का विस्तार किया जाए जो सामाजिक और आर्थिक निवेश एवं नीतियों के माध्यम से स्वास्थ्य, शिक्षा, शासन और अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में मार्गदर्शक का काम करे। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन और इंस्टीट्यूट ऑफ ह्यूमन डेवलपमेंट की इंडिया इम्पलॉयमेंट रिपोर्ट–2024 के अनुसार श्रमबल में कामकाजी आयु की आबादी के प्रतिशत (एलएफपीआर) और जनसंख्या में नियोजित लोगों के प्रतिशत (डब्ल्यूपीआर) में सुधार देखा गया जो 2019 में 50.2 प्रतिशत व 47. 3 प्रतिशत की तुलना में 2022 में 55.2 प्रतिशत और 52.9 प्रतिशत हो गया है। दोनों आंकड़ों में तीन साल में लगभग 5 फीसदी की स्पष्ट वृद्धि। बेरोजगारी दर में भी कमी आई है जो

2019 में 5.8 प्रतिशत थी, वह 2022 में घटकर 4.9 प्रतिशत पर रही। यदि सरकार नई ढांचागत परियोजनाएं शुरू करना चाहती है तो उसे श्रम, निर्माण, सेवाओं, कृषि उत्पादन कार्य से प्राप्त लाभ और प्रौद्योगिकी के सहारे की जरूरत होगी। इससे रोजगार के नए अवसर उत्पन्न होंगे। सरकार की ज्यादातर नई – पहलों का उद्देश्य आने वाले दिनों में रोजगार के नए अवसर पैदा करना है। समावेशी विकास के दृष्टिकोण पर आधारित एक बड़ी पहल संकल्प है जिसका लक्ष्य प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अगले पांच वर्षों में कम आय वाले व्यक्तियों के लिए अतिरिक्त तीन करोड़ नए घर बनाना है। जब हम इन घरों के निर्माण के सिलसिले में रोजगार निर्माण की गणना करते हैं तो पाते हैं हर घर का औसतन आकार 25 मीटर है। एक अनुमान के अनुसार हर घर के निर्माण और फिनिशिंग कार्य में लगभग तीन माह लगेंगे और हर घर के निर्माण में औसतन चार लोगों की जरूरत होगी। यानी प्रत्यक्ष रूप से अगले पांच वर्षों में लगभग 1,080 करोड़ श्रम दिवस का सृजन होगा। इससे अधिक तो यह कि इन तीन करोड़ घरों के निर्माण से विविध क्षेत्रों में लगभग 400 करोड़ श्रम–दिवसों का अतिरिक्त सृजन होगा। घरों के निर्माण से सीमेंट उत्पादन, ईंट निर्माण, लोहा और स्टील विनिर्माण संयंत्र, बिजली उपकरणों जैसे स्विच, सॉकेट, होल्डर आदि की फिटिंग, नल की फिटिंग, पेंट आदि क्षेत्रों में कार्यरत लोगों को रोजगार मिलेगा। कच्चा माल और अन्य सजावटी सामग्रियों की भी मांग होगी। ऐसे में, अगले सालों में तीन करोड़ नए घरों के निर्माण से कुल लगभग 1,480 करोड़ श्रम दिवस के रूप में नार प्रत्यक्ष रोजगार का सृजन किया जाएगा। इस तरह, केवल इसी नवाचार के जरिए अगले पांच सालों में लगभग 1.2 करोड़ लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार मिलेगा। अगर हम अन्य नवाचारों को शामिल करते हैं तो नए रोजगारों के सृजन की संख्या और भी ज्यादा होगी। पांचवर्ष 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य हासिल करने और अगले पांच वर्षों में दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के लिए हमें तकनीकी कौशल, नौकरियों की गुणवत्ता में सुधार करने के साथ ही बेहतर वेतन सुनिश्चित करने को प्राथमिकता देनी होगी।

निष्कर्ष –

महात्मा गांधी के विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता का आधार और भारत का बढ़ता प्रभाव के संदर्भ मे, भारत विश्व का सबसे बड़ा जनसंख्या वाला देश है तथा विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश भी महात्मा गांधी ने अपने विचारों में भारत के विकास और उसके आने वाले भविष्य को लेकर कहा था कि हमें आगे बढ़ाना है तो हमारी शिक्षा हमारा स्वराज हमारी अर्थव्यवस्था हमारा कौशल विकास हमारी बुनियादी शिक्षा इन सभी पर ध्यान देना होगा, किसी भी देश के विकास के लिए उसका आत्मनिर्भर होना जरूरी है। इसलिए भारत को भी विकास के आत्मनिर्भर होना जरूरी है। हमें उन मूलभूत आधार तत्वों पर ध्यान देना जरूरी है जैसे बुनियादी शिक्षा, पर्यावरण, जलवायु अर्थव्यवस्था, कौशल विकास कार्यक्रम वासुदेव कुटुंबकम की भावना का विकास मानवता, युद्ध जैसे भयंकर दुष्प्रभाव वाली गतिविधियों से बचाना अहिंसा का मार्ग अपनाना आत्मनिर्भर बनना, प्रकृति का ध्यान रखना, सामाजिक न्याय, आर्थिक विकास, राजनीतिक आधार को पूर्णरूप से समझना होगा। भारत का सुरक्षित भविष्य और विश्व गुरु की और बढ़ते देखना है तो इन सभी महत्वपूर्ण आधारभूत तत्वों पर ध्यान देने की जरुरत हैं इसको लेकर वर्तमान में महात्मा गांधी के विचारों पर भारत सरकार लगातार कार्यरत हैं भारत आज संपूर्ण विश्व में दुनिया का पांचवा सबसे बड़ा अर्थव्यवस्था वाला देश है जहां भारत सरकार ने आने वाले वर्षों में भारत एक विकसित भारत होगा इस विचार के आधार पर भारत सरकार द्वारा लगातार कार्य किया जा रहा हैं। वासुदेव कुटुंबकम की भावना का विकास हो ऐसी कामना भारत करता है भारत ने गांधीवादी विचारधारा को अपनाते हुए आज विकास की राह पर चल पड़ा है। हमारे अनुसंधान के आधार पर हम यह मान सकते हैं कि भारत गांधी विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता बहुत अधिक रही है जिसका आधार वर्तमान में नजर आ रहा है भारत का प्रभाव लगातार विश्व में बढ़ता जा रहा हैं। गांधी के राष्ट्र में गांधी के विचारों में गांधी के मन में गांधी के मस्तिष्क में यही कामना थी की भारत आगे बढ़े एक कल्याणकारी राष्ट्र का निर्माण हों प्रगतिशील देश बने मानवता अहिंसावादी धर्मनिरपेक्ष और दुनिया में चमकता हुआ भारत का नाम जो हमें वर्तमान भारत में भी नजर आ

रहा हैं भारत आर्थिक उन्नति की ओर बढ़ रहा है यहां स्वरोजगार कृषि की प्रधानता कौशल विकास कार्यक्रम आदि के माध्यम से भारत एक आत्मनिर्भर भारत बन चला हैं।

संदर्भ ग्रन्थ –

1. अहलूवालिया, एम.एस. (2002). "भारत में 1991 से आर्थिक सुधार क्या क्रमिकता कारगर रही है?" जर्नल ऑफ इकोनॉमिक पर्सपेक्टिव्स, 16 (3) 67–88.
2. मिश्रा, एस. और राजीव, एस. (2002). "पंचायती राज को पुनर्जीवित करना–ग्राम स्वराज से दूर" मिश्रा, ए. डी. (सं.) रिडिस्कवरिंग गांधी, नई दिल्ली मित्तल पब्लिकेशंस में।
3. प्रो.गौरव वल्लभ (आर्थिक समीक्षक ,राजनेता) अर्थव्यवस्था – रोजगार बढ़ाने के साथ तकनीकी कौशल पर ध्यान देने का समय (31 मई 2024 राजस्थान पत्रिका)
4. महात्मा गांधी– हरिजन पृष्ट संख्या 205, 208
5. बोहरा अंशुमान , नायक शेलेन्द्र (फरवरी 2022) इक्कीसवी सदी में गांधी विचार और प्रासंगिकता पृष्ट संख्या 10–12
6. दृष्टी आईएएस – 2022 वर्तमान समय में गांधी की प्रासंगिकता पृष्ट संख्या 5 –6
7. डॉ . रमन गांधी के आर्थिक विचार पृष्ट 56
8. गांधी, एम. (1933). हिंद स्वराज या भारतीय स्वराज्य. अहमदाबाद नवजीवन पब्लिशिंग हाउस